यूपी की पहचान बदल गई है

प्रख्यात अभिनेता अनुपम खेर ने भारतेंदु नाट्य अकादमी में प्रशिक्षक के तौर पर लखनऊ में कई साल बिताए हैं। अनुपम खेर इन दिनों काम के सिलसिले में लखनऊ आए हैं। उन्होंने चार दशक पहले और आज के लखनऊ को तुलनात्मक नजर से देखा। उत्तर प्रदेश में आए बदलाव पर अपना नजरिया भी रखा। पेश हैं उनके विचार...

रखी धूप और उमस भरे मौसम के बीच करीब एक महीने से उत्तर प्रदेश में हूं। बीते कुछ दिनों में यहां बारिश तो हुई है, लेकिन गर्मी और ठंडक के संघर्ष में 'उमस' बाजी मार रही है। बीएनए में अध्यापन के जरिये 40 साल पहले लखनऊ से जुड़ा नाता, मुझे यूपी का होने का अहसास कराता रहता है। यूं तो पहले भी कई बार यूपी आना हुआ है, लेकिन इस बार लंबे शूटिंग शेड्यूल के चलते थोड़ा अधिक करीब से ज्यादा सुकून के साथ लोगों से मिलना-जुलना हो पा रहा है, तो मैंने सोचा क्यों न अपने अनुभवों को आपसे भी साझा किया जाए।

अनुपम खेर

मेरे जैसे सांस्कृतिक प्रकृति के व्यक्ति के लिए दशकों तक यूपी की पहचान 'भय, भूख और भ्रष्टाचार' रही है। एक ऐसा राज्य जहां पोटेंशियल तो खूब था, लेकिन उसकी पहचान करने वाला, उसे तराशने वाला कोई नहीं। लेकिन इस बार जब मैं लोगों से मिल रहा हूं, तो मैंने उनके चेहरे पर गजब का आत्मविश्वास और मन में सुकून का भाव महसूस किया है। कुछ इस तरह का मानो, उनके जीवन में कितनी भी बड़ी चुनौती क्यों न आये, कोई है जो उनके लिए खड़ा रहेगा। यह बड़ा बदलाव है। यहां रहते हुए राज्य की गतिविधियों का अपडेट मिल रहा है तो इस निष्कर्ष पर पहुंचता हूं कि इस बदलाव के पीछे यहां की सरकार के प्रयास मुख्य कारण हैं।

कुछ दिन पहले यहां के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भेंट हुई थी। उस दौरान उनसे यूपी की फिल्म सिटी प्रोजेक्ट और उसे लेकर सिनेमा जगत में सकारात्मक मैसेज पर विस्तार से चर्चा हुई थी। मैंने उन्हें यूपी की शानदार फिल्म प्रोत्साहन नीति के लिए धन्यवाद भी दिया, तो विदा देते समय उन्होंने हमें अपनी ओडीओपी योजना के बारे में बताया और कुछ प्रोडक्ट भी दिए। अभी चंद रोज पहले मैंने पढ़ा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जर्मनी में जी-7 की बैठक में कुछ वैसे ही ओडीओपी प्रोडक्ट तमाम राष्ट्र प्रमुखों को भेंट किए। यह खबर पढ़कर मेरा विश्वास और पुख्ता हो गया और आज यह कहने में कोई गुरेज नहीं कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के रूप में यूपी को एक ऐसा जौहरी मिला है, जो न केवल हुनर और क्षमता की पहचान रखता है, बल्कि उसे तराश कर हीरा बना रहा है।

मैंने देखा है कि वर्तमान की उत्तर प्रदेश सरकार आस्था और अर्थव्यवस्था के प्रति समदर्शी भाव रखती है। आज हमारे आस्था के मानबिंदु अयोध्या, काशी और मथुरा का पुरातन वैभव फिर से शोभायमान हो रहा है, तो रामायण परिपथ, बौद्ध परिपथ, कृष्ण परिपथ भी तैयार हो रहे हैं। यहां विंध्यवासिनी दरबार और नैमिष धाम संवर रहा है तो काशी की देव दीपावली, ब्रज रंगोत्सव, अयोध्या दीपोत्सव ने इस पुण्य प्रदेश को वैश्विक पटल पर नई पहचान दिलाई है। मैं दुनिया भर के कई देशों में जाता रहा हूं और वहां भारत खासकर उत्तर प्रदेश आने की उनकी चाहत को महसूस करता हूं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यूपी को देश की सांस्कृतिक राजधानी की तरह पुनर्स्थापित करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। इस सोच के पीछे दरअसल उनकी आर्थिक समझ भी है। ऐसे प्रयास पर्यटन को बढ़ावा देने में बहुत मददगार होते हैं। यह रोजगार सृजन और विकास के लिहाज से बड़ा उपयोगी होता है।

सिविल एविएशन सेक्टर में तो यूपी की उड़ान हर दिन नई ऊंचाई पर पहुंचते हुए देखी जा सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सपने 'हवाई चप्पल पहनने वाला भी हवाई जहाज की सैर करे' को मूर्तरूप देने की दिशा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बड़ी शिद्दत से काम किया है। विश्वास नहीं होता कि महज पांच साल में यहां नौ एयरपोर्ट शुरू हो गए। अभी दो दिन पहले लखनऊ में पढ़ा कि आजमगढ़, श्रावस्ती, सोनभद्र, चित्रकूट और अलीगढ़ एयरपोर्ट की शुरुआत के लिए सरकार ने एयरपोर्ट अथॉरिटी से एमओयू भी कर लिया। कुशीनगर,

कभी बीमारू प्रदेश में गिना जाने वाला यूपी आज राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निवेशकों के लिए 'ड्रीम डेस्टिनेशन' बन गया है। अभी कुछ ही दिन पहले प्रधानमंत्री ने एक साथ 80 हजार करोड़ रुपये की औद्योगिक परियोजनाओं की शुरुआत की।

वाराणसी और लखनऊ के बाद अब जेवर और अयोध्या में भी अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा बन रहा है। घर में उजियारा और पेट में भोजन और चेहरे पर मुस्कान लाने का जो संकल्प प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लिया है, उसे सफल होते हुए देखना है तो एक बार यूपी जरूर आना चाहिए।

यूपी की बात हो और कानून-व्यवस्था का जिक्र न हो, ऐसा कैसे हो सकता है। अब जबकि करीब महीने भर से उत्तर प्रदेश में हूं, तो अखबारों से आसानी से अपडेट मिल रहा है। माफिया के काले साम्राज्य पर चलते योगी जी के बुल्डोजर किसी सताए हुए व्यक्ति के मन में 'शिमला' से कम ठंडक नहीं देते। बाकी, माफी नामे की तख्ती लटकाए थानों में पहुंचते अपराधियों की तस्वीरों से पूरा देश 'योगी मॉडल' को सराह ही रहा है। जिस यूपी में अंधेरा होने के बाद जब बेटियां घर से बाहर नहीं निकलती रही हैं, वहां अब देर रात तक सड़कों पर बेखौफ आती-जाती बेटियों को देखकर मन में बड़ा संतोष होता है। लगता है कि कोई है, जो इनकी सुरक्षा की गारंटी में दिन-रात जाग रहा है। हाल ही में संवाद के माध्यम से धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर हटाने और रामनवमी/ईद पर्व के शांतिपूर्ण आयोजन से मन को बड़ा संतोष मिला। मैं अपने निजी अनुभवों से कह सकता हूं कि सुरक्षा, सुशासन और विकास के जिस वादे को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की जोड़ी ने किया था, वह उत्तर प्रदेश में पूरा हो रहा है। सच में, मोदी हैं तो मुमकिन है और योगी हैं तो यकीन है!

कभी बीमारू प्रदेश में गिना जाने वाला उत्तर प्रदेश आज राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निवेशकों के लिए 'ड्रीम डेस्टिनेशन' बन गया है। अभी कुछ ही दिन पहले प्रधानमंत्री ने एक साथ 80 हजार करोड़ रुपये की औद्योगिक परियोजनाओं की शुरुआत की। लाखों-करोड़ों के काम पहले से ही चल रहे हैं। इंडस्ट्रीज की मूलभूत जरूरतों में से एक बिजली के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश की कोशिशें काबिल-ए-तारीफ हैं। मेरे कई दोस्त बताते हैं कि कभी यहां बत्ती आना अखबारों की सुर्खियां बनता था, आज तो चंद घंटों के लिए कटौती हो जाए तो लोगों को भरोसा नहीं होता। फिलहाल तो मैं लखनऊ में हूं और इस दावे की पुष्टि खुद ही कर सकता हूं। भय, भूख और भ्रष्टाचार के अंधकार में गुम उत्तर प्रदेश को निवेशकों का ड्रीम डेस्टिनेशन बनाना आसान न रहा होगा। लेकिन योगी जी के कुशल नियोजन, ध्येयनिष्ठ क्रियान्वयन और दृढ़संकल्प भावना ने इसे साकार किया है। अगर इसी तरह यूपी की रफ्तार रही तो निश्चित ही यूपी देश के विकास का ग्रोथ इंजन बनेगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)